

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : दिसम्बर 2010

प्रश्न पत्र-I

समय : 3 घन्टे

कुल अंक : 50

नोट :- कुल पांच प्रश्नों का उत्तर दें। प्रश्न 1 एवं 6 अनिवार्य है। प्रत्येक भाग से कम से कम एक और प्रश्न का उत्तर देते हुए शेष तीन प्रश्नों का उत्तर दें। सब प्रश्नों का अंक समान है।

भाग-I (अष्टकवर्ग)

1. निम्न कुण्डली के लिए अष्टक वर्ग (मिनाष्टक वर्ग एवं सर्वाष्टक वर्ग) की गणना करें
लग्न-कन्या 18:58, सूर्य-कर्क 13:30, चन्द्र-सिंह 26:05, मंगल-सिंह 01:02
बुध-सिंह 06:56, गुरु-कन्या 05:22, शुक्र-सिंह 11:40,
शनि-वृश्चिक 14:31 राहु-तुला 22:52, केतु-मेष 22:52
(30.07.1957, 10:30 प्रातः, ओंगल)
2. (क) सर्वाष्टक वर्ग के आधार पर किसी कुण्डली के फलादेश के क्या नियम है।
(ख) प्रश्न 1 में दी गई कुण्डली का सर्वाष्टक वर्ग के आधार पर अध्ययन कर 1,4,5,7,9 और 10 वें भावों पर चर्चा करें।
3. (क) कक्षा नियम क्या है? इसकी फलादेश में भूमिका के बारे में लिखें।
(ख) दशाओं के फल जानने के लिए अष्टक वर्ग का प्रयोग किस प्रकार किया जाता है?
4. अष्टक वर्ग का निर्माण राशि कुण्डली के आधार पर किया जाना चाहिए अथवा भाव कुण्डली के आधार पर? विस्तार से चर्चा करें।
5. उपयुक्त उदाहरण सहित अष्टक वर्ग के आधार पर आयुर्दय निर्धारण की विधि समझाए।

भाग-II (प्रश्न ज्योतिष)

6. क. जन्म कुण्डली व प्रश्न कुण्डली में क्या संबंध है, समझाए?
ख. वह स्थितियाँ (योग) समझाए जो कि प्रश्न कुण्डली में घटना के फलिभूत होने की ओर संकेत करते हैं।
7. प्रश्न शास्त्र में इशराफ और कम्बूल योग के महत्व पर विस्तार से चर्चा करें।
8. (क) प्रश्न ज्योतिष में विभिन्न भावों की महत्ता समझाए।
(ख) प्रश्न कुण्डली की क्या सीमाएं हैं, लिखें।
9. (क) विवाह से सम्बन्धित प्रश्न के फलादेश के लिए किन तथ्यों को प्रयोग किया जाता है।
(ख) निम्न प्रश्न कुण्डली, जो कि विवाह के लिए है, का फलादेश दें।
लग्न-मीन 5:34, सूर्य-कन्या 29:57, चन्द्र-मकर 28:10, मंगल-तुला 28:17
बुध-तुला 0:15, गुरु (व)-मीन 01:11, शुक्र(व)-तुला 17:32,
शनि-कन्या 15:44, राहु-धनु 11:29
(प्रश्न समय - 17.10.2010, 16:31, हैदराबाद)
10. (क) प्रश्न कुण्डली में संतान के विषय में किस प्रकार फलादेश किया जाता है?
(ख) निम्न प्रश्न कुण्डली के आधार पर संतान उत्पत्ति पर अपना मत प्रकट करें।
लग्न-तुला 16:29, सूर्य-कर्क 16:51, चन्द्र-मेष 17:55, मंगल-कन्या 8:38
बुध-सिंह 13:53, गुरु(व)-मीन 09:12, शुक्र-कन्या 1:58, शनि-कन्या 7:05
राहु-धनु 17:46
(प्रश्न समय - 3.08.2010, 12:40, दिल्ली)

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : दिसम्बर 2010

समय : 3 घन्टे

प्रश्न पत्र-II

कुल अंक : 50

नोट :- कुल पांच प्रश्नों का उत्तर दें। प्रश्न 1 एवं 6 अनिवार्य हैं। प्रत्येक भाग से कम से कम एक और प्रश्न का उत्तर देते हुए शेष तीन प्रश्नों का उत्तर दें। सब प्रश्नों का अंक समान है।

भाग-I (षडबल)

1. निम्न कुण्डली में सभी ग्रहों के उच्च बल की गणना करें।
लग्न-वृश्चिक 12:57, सूर्य-वृषभ 03:06, चन्द्र-धनु 16:55
मंगल-मिथुन 14:50, बुध-मेष 16:48, गुरु-सिंह 28:34
शुक्र-वृषभ 11:46, शनि-वृश्चिक 18:51, राहु-तुला 26:22
2. क) षडबल का फलादेश में क्या उपयोग है?
ख) सृष्टियादि अहर्गण क्या है?
3. क) प्रश्न एक में दी गई कुण्डली के लिए केन्द्रबल की गणना करें।
ख) बृहस्पति व बुध ग्रह के लिए प्रश्न एक में दी गई कुण्डली के लिए दिग्बल की गणना करें। राशि मध्य को ही भाव मध्य मान लें।
4. ग्रहों का कुल षडबल इस प्रकार है (षष्ट्यांश में) : सूर्य 540, चन्द्र 377.9
मंगल 323.8, बुध 445.1, गुरु 419.7, शुक्र 486.3 और शनि 407.6
क) ग्रहों का नैसर्गिक बल कितना है?
ख) कौन-कौन से ग्रहों का आवश्यकता से कम बल मिला है?
ग) ग्रहों को उनके बल के अनुसार क्रमवार लिखें?
घ) भाव बल किन बलों से मिलकर बनता है?
5. निम्न का उत्तर दें :-
i) 280° पर सूर्य का उच्च बल कितना होगा?
ii) वर्गोत्तम बुध कर्क में है तो युग्मायुग्म बल कितना होगा?
iii) 15° मकर में मंगल का द्रेशकोण बल कितना होगा?
iv) पूर्णिमा पर चन्द्रमा का पक्षबल लगभग ----- होता है?
v) इस ग्रह का अयन बल सदा 30 षष्ट्यांश से अधिक होता है।
vi) यदि शनि की क्रांति 0 अंश है तो अयन बल कितना होगा?
vii) शुक्र को कम से कम ----- रूपा का बल मिलना चाहिए।
viii) चतुर्थ भाव का भावमध्य जलचर राशि से पड़ता है तो भाव दिग्बल कितना होगा?
ix) मंगल का चेष्टा बल मदीय पर कितना होगा?
x) यदि जन्म सोमवार को पाँचवीं होरा में है तो बुध का होरा बल कितना होगा?

भाग-II (भाव निर्णय)

6. क) चतुर्थ, पंचम एवं सप्तम भाव के क्या फल है?
ख) निम्न कुण्डली में उपरोक्त भावों पर प्रकाश डालें।
लग्न-मिथुन 3:26, सूर्य-वृश्चिक 12:27, चन्द्रमा-वृश्चिक 8:36,
मंगल-तुला 1:23, बुध-वृश्चिक 29:44, गुरु-तुला 27:15,
शुक्र(व)-तुला 16:26, शनि(व) 24:26, राहु-कुंभ 3:55
7. क) षोडश वर्ग से आप क्या समझते हैं?
ख) किसी भाव को समझने के लिए षोडश वर्ग का क्या उपयोग है?
ग) क्या मात्र इन कुण्डलियों से फलादेश हो सकता है (बिना जन्म कुण्डली देखे)?
घ) क्या योग इन वर्गों पर भी लागू होते हैं? चर्चा करें।
8. निम्न को समझाएं :-
क) भावात भावम् नियम ख) भाव निर्णय जब राहु/केतु उपस्थित हो
ग) भाव कुण्डली का महत्व ग) विमसोपाक बल
9. कारकों भाव नाशाय से आप क्या समझते हैं? यह नियम प्रयोग कर निम्न कुण्डली पर अपना मत प्रस्तुत करें।
लग्न-वृश्चिक 17:48, सूर्य-सिंह 29:53, चन्द्र-वृश्चिक 29:13, मंगल-सिंह 7:45, बुध-कन्या 7:26, गुरु-मिथुन 1:08, शुक्र-कर्क 27:16, शनि-तुला 2:33, राहु-मकर 8:39
10. भाव निर्णय के सामान्य नियमों पर विस्तार से लिखें।

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : दिसम्बर 2010

प्रश्न पत्र-III

समय : 3 घण्टे

कुल अंक : 50

नोट :- कुल पांच प्रश्नों का उत्तर दें। प्रश्न 1 एवं 6 अनिवार्य है। प्रत्येक भाग से कम से कम एक और प्रश्न का उत्तर देते हुए शेष तीन प्रश्नों का उत्तर दें। सब प्रश्नों का अंक समान है।

भाग-I (आयुर्दाय)

1. (क) बालारिष्ट के महत्वपूर्ण योग क्या हैं?
(ख) समझाएं कि कैसे बालारिष्ट भंग होता है?
2. निम्न कुण्डली के लिए पिण्डायु की गणना करें :-
लग्न-मेष 8:17, सूर्य-मेष 18:38, चन्द्र-तुला 10:28, मंगल-धनु 28:42,
बुध-मीन 21:57, बृहस्पति-मीन 5:16, शुक्र-मीन 15:49, शनि-मीन 0:39,
राहु-तुला 15:27 (3.5.1939, 5:13 बजे, होशियारपुर, राहु 12व 10मा 8दि)
3. निम्न पर टिप्पणी लिखें :-
क) अंशायुर्दय ख) खर ग्रह
4. आयुर्दय को आप वर्गों में कैसे बाटते हैं? कुछ सामान्य नियम बताएँ जिनसे आप जातक को उन वर्गों में रख सकें।
5. जैमिनी सिद्धान्त द्वारा आयुर्दय का निर्धारण किस प्रकार करते हैं? प्रश्न 2 में दिए गए जन्मांक पर इसका प्रयोग करें।

भाग-II (चिकित्सा ज्योतिष)

6. निम्न कुण्डली उस जातक की है जिनकी दोनों आँखों (कम ज्योति) की समस्या है जोकि दायीं आँख में अधिक है। साथ ही उन्हें कम आयु में ही मधुमेह हो गया। इसके ज्योतिषीय कारण बताएं।
लग्न-वृषभ 18:48, सूर्य-मकर 10:01, चन्द्र-धनु 06:24, मंगल-धनु 2:16
बुध-धनु 16:53, गुरु(व)-मिथुन 8:41, शुक्र(व)-मकर 1:53
शनि(व)-धनु 24:34, राहु-मकर 22:43
जातक का जन्म 24.1.1990 को हुआ था।
7. संक्षिप्त में चर्चा करें :-
क) चिकित्सा ज्योतिष में षष्टम् व द्वादश भावों का महत्व
ख) बृहस्पति और मंगल से सम्बन्धित रोग
8. निम्न के कुछ योग बताएँ
क) रक्त कैसर ख) अन्धापन
ग) हृदय रोग घ) अलर्जी
9. निम्न कुण्डली का विश्लेषण कर यह बताएँ कि जातक को किस प्रकार की स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या रही होगी?
लग्न-कन्या 10:57, सूर्य-वृश्चिक 6:02, चन्द्रमा-वृश्चिक 8:38
मंगल-तुला 15:27, बुध-वृश्चिक 21:56, गुरु-कन्या 28:44
शुक्र-धनु 23:08, शनि-वृश्चिक 21:29, राहु-कन्या 17:22
(22.11.1957, 2:38 घण्टे, दिल्ली, शनि 11व 5मा 10दि)
10. नैसर्गिक अशुभ ग्रहों से विभिन्न भावों में कौन से रोग उत्पन्न होते हैं?

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : दिसम्बर 2010

प्रश्न पत्र-IV

समय : 3 घण्टे

कुल अंक : 50

नोट :- कुल पांच प्रश्नों का उत्तर दें। प्रश्न 1 एवं 6 अनिवार्य हैं। प्रत्येक भाग से कम से कम एक और प्रश्न का उत्तर देते हुए शेष तीन प्रश्नों का उत्तर दें। सब प्रश्नों का अंक समान है।

भाग-I (दशा पद्धति)

1. निम्न कुण्डली के लिए शनि महादशा के सामान्य फल व शनि महादशा में मंगल अन्तरदशा के विशेष फल बताएं :-
जन्म - 11.10.1942, 15:05 घण्टे, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।
लग्न-कुम्भ 3:19, सूर्य-कन्या 24:23, चन्द्रमा-तुला 10:21
मंगल-कन्या 22:36, बुध(व)-कन्या 23:39, गुरु कर्क 00:32,
शुक्र-कन्या 15:11, शनि(व)-कन्या 19:13, राहु-सिंह 10:33
केतु-मकर 10:33 दशा शेष राहु 12 वर्ष 12मा 1दि
2. किन्हीं तीन पर संक्षिप्त में लिखें :-
(क) वक्री ग्रह के दशा फल उदाहरण सहित।
(ख) किसी घटना व उसके समय का ज्योतिषीय निर्धारण उदाहरण सहित।
(ग) योगिनी दशा में आठ योगिनियों के अर्थ व उनका महत्त्व।
(घ) प्रश्न 1 के जातक के कार्य क्षेत्र पर कारण सहित चर्चा।
3. निम्न जातक की विवाह की सम्भावना पर प्रकाश डालें
जन्म 13 जुलाई 1972, 8:22 प्रातः, दिल्ली
लग्न-सिंह 24:42, सूर्य-मिथुन 27:19, चन्द्रमा-कर्क 26:54,
मंगल-कर्क 15:40, बुध-कर्क 23:35, बृहस्पति(व)-धनु 7:43,
शुक्र-वृषभ 25:01 शनि-वृषभ 21:50, राहु-मकर 2:35
दशा शेष बुध 3-11-11 दि.
4. किसी कुण्डली के फलादेश के लिए सामरिक ज्योतिषीय परिक्रिया क्या है? क्या एक से अधिक दशा पद्धतियों का प्रयोग फलादेश की प्रक्रिया में सहायता करता है? उदाहरण सहित समझाएं।
5. विंशोत्तरी महादशा में अन्तरदशा के फलों को जानने के लिए मुख्य नियमों पर प्रकाश डालें।

भाग-II (गोचर)

6. किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें :-
(क) गोचर फलादेश में चन्द्रमा की महत्ता क्यों है? द्विग्रह गोचर से आप क्या समझते हैं?
(ख) मूर्ति निर्णय पद्धति के बारे में बताएं।
(ग) विपरीत वेध के नियम समझाएं।
7. सप्त श्लाका चक्र से आप क्या समझते हैं? इसका क्या महत्त्व है?
8. गोचर में अष्टक वर्ग के महत्त्व को समझाएं? साथ ही भिनाष्टक वर्ग के द्वारा गोचर फलादेश किस प्रकार किया जाता है?
9. कक्षा से आप क्या समझते हैं विस्तार से समझाएं। शनि की साढ़े साती के फलादेश में कक्षा का क्या कोई महत्त्व है?
10. कुण्डली के ग्रहों के ऊपर गोचर ग्रहों का निकलना अवश्य ही जातक पर अपना असर छोड़ता है। इस पर चर्चा करें।

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : दिसम्बर 2010

समय : 3 घन्टे

प्रश्न पत्र-V

कुल अंक : 50

नोट :- कुल पांच प्रश्नों का उत्तर दें। हर एक भाग में से अनिवार्य प्रश्नों के अलावा कम से कम एक प्रश्न का उत्तर देते हुए शेष तीन प्रश्नों का उत्तर दें। प्रश्न 1 और 6 अनिवार्य है। सब प्रश्नों का अंक समान है। भाग एक का उत्तर जैमिनीय आधार पर एवं भाग दो पराशरी सिद्धांत के अनुसार उत्तर देना है।

भाग-I (जैमिनी ज्योतिष)

1. श्री श्री रविशंकर जी की कुण्डली नीचे दी गई है :-
13.5.1956, 5:45 प्रातः, पापनसम, तंजौर (तमिलनाडु)
शेष दशा - मंगल 2व 2मा 26दि
लग्न-मेष 26:29, सूर्य-मेष 28:57, चन्द्र-मिथुन 2:14, मंगल-मकर 24:16
बुध-वृषभ 15:31, गुरु-कर्क 29:12, शुक्र-मिथुन 09:49,
शनि(व)-वृश्चिक 06:49, राहु-वृश्चिक 14:53, केतु-वृषभ 14:53
(क) चर दशा की गणना करें।
(ख) जैमिनी नियमों के अनुसार उनके कार्य क्षेत्र पर प्रकाश डालें।
2. निम्न का फलादेश में उपयोग समझाएं :-
(क) अमात्य कारक (ख) अर्गला (ग) आरुढ़ लग्न
3. निम्न कथन सत्य है अथवा असत्य :-
i) सभी चर राशियां अपने से दूसरे को छोड़, सभी स्थिर राशियों पर दृष्टि डालती हैं।
ii) जैमिनी के अनुसार मंगल सौतेली माँ को दर्शाता है।
iii) अष्टमेश तथा द्वादशेश में जो बली हो वही रुद्र होता है।
iv) स्थिर राशि चर राशि से अधिक बली होती है।
v) यदि कारकांश लग्न से द्वितीय भाव में शुक्र स्थित हो तो जातक राजदूत बन सकता है।
vi) नवांश में आत्मकारक से द्वितीय भाव में सूर्य और राहु शुभ ग्रहों से दृष्ट होने पर जातक चिकित्सक बनता है।
vii) यदि शनि लग्न अथवा कारकांश अथवा चन्द्र लग्न में स्थित हो तो आयुर्दय में एक कक्षा कम कर दी जाती है।
viii) यदि लग्न एवं सप्तम भाव शुभ करतरी में हो तो आयुर्दय में एक कक्षा बढ़ा देते हैं।
ix) कारकांश लग्न से द्वितीय एवम् अष्टम भाव में समान अशुभ ग्रह केमदुम योग बनाते हैं।
x) यदि बृहस्पति मीन राशि में हो तो स्थिर दशा नौ वर्ष की होती है।
4. दाराकारक, दारापद और उपपद का फलादेश में क्या योगदान है समझाएं।
5. जैमिनी पद्धति व पराशरी पद्धति में अंतर बताएं?

भाग-II (विवाह एवं मेलापक)

6. निम्न कुण्डलियों का मिलान करें।
पुरुष 10.8.1981, 00:07 घंटे, मुम्बई शनि 2व 5मा 14दि.

क्रमांक	ग्रह	राशि	डिग्री	मिनट
01	लग्न	मेष	25	16
02	सूर्य	कर्क	23	28
03	चंद्रमा	वृश्चिक	14	56
04	मंगल	मिथुन	21	20
05	बुध	कर्क	22	58
06	बृहस्पति	कन्या	13	58
07	शुक्र	सिंह	25	53
08	शनि	कन्या	12	45
09	राहु	कर्क	08	01
10	केतु	मकर	08	01

महिला 28.1.1984, 16 घंटे 52 मिनट, दिल्ली, बुध 8व 4मा 11दि.

क्रमांक	ग्रह	राशि	डिग्री	मिनट
01	लग्न	कर्क	01	20
02	सूर्य	मकर	14	06
03	चन्द्रमा	वृश्चिक	23	26
04	मंगल	तुला	14	57
05	बुध	धनु	20	33
06	बृहस्पति	धनु	08	14
07	शुक्र	धनु	09	40
08	शनि	तुला	22	07
09	राहु	वृषभ	21	07
10	केतु	वृश्चिक	21	07

7. वैवाहिक असमानता के 5 योग लिखें। क्या योग निम्न कुण्डली में उपस्थित हैं? चर्चा करें।

जन्म : 8.6.1957, 2:48 घण्टे, मुम्बई, मंगल - 4व 10मा 27दि.

लग्न-मीन 29:52, सूर्य 23:33 और बुध 00:15 वृषभ में,

चन्द्रमा 27:21, कन्या में, मंगल 28:12 और शुक्र 07:57 मिथुन में, गुरु 29:09

सिंह में, शनि(व) 17:17 वृश्चिक में, राहु 26:13 तुला में और केतु 26:13 मेष में।

8. (क) एक से अधिक विवाह के कोई 5 योग लिखें।

(ख) क्या निम्न कुण्डली में बहु विवाह के योग उपस्थित है?

पुरुष 29.7.1959, 2:45, मुम्बई, शुक्र 1व 4मा 1दि.

क्रमांक	ग्रह	राशि	डिग्री	मिनट
01	लग्न	वृषभ	23	29
02	सूर्य	कर्क	11	49
03	चंद्र	मेघ	25	46
04	मंगल	सिंह	11	56
05	बुध(व)	कर्क	24	35
06	गुरु	तुला	28	56
07	शुक्र	सिंह	19	50
08	शनि(व)	धनु	08	16
09	राहु	कन्या	12	49
10	केतु	मीन	12	49

9. (क) दशा संधि मेलापक में किस प्रकार से महत्वपूर्ण है समझाएं?

(ख) क्या विवाह में तीन ज्येष्ठों का इकट्ठा होना संभव है। चर्चा करें।

(ग) क्या आप समान नक्षत्र वाले जातक यदि राशियां भिन्न हैं तो मेलापक करेंगे?

10. निम्न सत्य हैं या असत्य

i) विवाह कम आयु में हो सकता है यदि शुभ ग्रह सप्तमेश से निकटतम शुभ भाव में उपस्थित हो।

ii) उपचय राशि में यदि शुक्र एवं सप्तमेश साथ-साथ है तो विवाह उपरान्त सम्पन्नता होगी।

iii) यदि मंगल चतुर्थ भाव में शुक्र की राशि में हो तो मंगल दोष समाप्त हो जाता है।

iv) यदि जन्म राशि के नाथ एक ही हो अथवा मित्र हो तो नाडी दोष नजरदाज किया जा सकता है।

v) यदि अष्टमेश अपने नवांश में हो व अष्टम भाव में अशुभ ग्रह हो तो विधवा होने की सम्भावना होती है।

vi) यदि बृहस्पति सप्तम में बिना किसी अशुभ प्रभाव से उपस्थित हो तो साथी उत्तम सदाचारी होता है।

vii) यदि शुक्र व एकादशेश लग्न में हो तो विवाह अवश्य होता है।

viii) यदि चन्द्रमा शुष्क राशि में हो तो विवाह में विलम्ब हो सकता है।

ix) सप्तमेश व शुक्र यदि बजर राशि में हो तो विवाह नहीं होता है।

x) यदि शनि सप्तम में तुला राशि में हो तो वैवाहिक जीवन सुखद होता है।

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : दिसम्बर 2010

प्रश्न पत्र-VI

समय : 3 घण्टे

कुल अंक : 50

नोट :- कुल पांच प्रश्नों का उत्तर दें। प्रश्न 1 एवं 6 अनिवार्य हैं। प्रत्येक भाग से कम से कम एक और प्रश्न का उत्तर देते हुए शेष तीन प्रश्नों का उत्तर दें। सब प्रश्नों का अंक समान है।

भाग-I (फलादेश की मिश्रित एवं उच्च तकनीक)

1. निम्न जन्मांग का अध्ययन कर दिए गए प्रश्नों का उत्तर दें :-
(क) क्या जातक एक उच्च कोटि का वकील बन सकता है?
(ख) क्या वे मंत्री रह चुके हैं?
जन्म 14.9.1923, 16:12 घण्टे, शिकारपुर पाकिस्तान, पुरुष
शेष दशा - राहु 3व 8मा 7दिन
लग्न-मकर 13:30, सूर्य-सिंह 27:49, चन्द्रमा-तुला 17:16
मंगल-सिंह 15:45, बुध-कन्या 20:49, बृहस्पति-तुला 22:39
शुक्र-सिंह 28:54, शनि-कन्या 26:21, राहु-सिंह 18:41, केतु-कुंभ 18:41
2. किसी कुण्डली में निम्न का आकलन कैसे करेंगे? दर्शाएं।
क) बारम्बार दुर्घटना की सम्भावना ख) धन हानि ग) दुखद वैवाहिक जीवन
घ) राजयोगों का फलीभूत होना
3. एक पुरुष जातक की कुण्डली नीचे दी गई है। इसका अध्ययन कर जातक के कर्म क्षेत्र पर प्रकाश डालें :-
जन्म 12.12.1950, 23:50, बेंगलोर, दशा शेष-चन्द्र 7व 1मा 7दि
लग्न-सिंह 20:30, सूर्य-वृश्चिक 27:0, चन्द्र-मकर 13:52
मंगल-मकर 4:48, बुध-धनु 17:6 गुरु-कुंभ 8:17, शुक्र-धनु 4:2,
शनि-कन्या 8:22 राहु-मीन 0:45, केतु-कन्या 0:45
4. एक पुरुष जातक के जीवन की कुछ घटनाएँ नीचे दी गई हैं जो शुक्र-बुध दशा (25-6-1968 से 26-4-1971) में घटित हुई। उन का ज्योतिषीय विश्लेषण करें।
(क) नौकरी मिली - 1970 में
(ख) माता का देहान्त - 14.09.1970 को
(ग) विवाह - 14.2.1971
जन्म - 15.8.1948, 4:38 घण्टे, 80 पू 55/26 उ. 51,
शेष दशा - केतु 3व 10 मा
लग्न-कर्क 15:12, सूर्य-कर्क 28:53, चन्द्र-धनु 5:58,
मंगल-कन्या 24:14, बुध-सिंह 2:10, गुरु(व) वृश्चिक 25:57,
शुक्र-मिथुन 14:44, शनि-सिंह 2:27, राहु-मेष 15:21, केतु-तुला 15:21
5. प्रश्न 1 के जातक का सप्ताश बना कर उस जातक की संतान व उनके जीवन व सफलताओं पर प्रकाश डालें।

भाग-II (मेदनीय ज्योतिष)

6. किन्हीं तीन पर संक्षिप्त में लिखे :-

- (क) सूखा (ख) सोना व चांदी के मूल्य में वृद्धि
(ग) सप्त नाड़ी चक्र (घ) कूर्म चक्र
(ङ) संघट्ट चक्र

7. भारत की आजादी की कुण्डली व चैत्र शुक्ल प्रतिपदा कुण्डली 2010 (जो नीचे दी गई है) का अध्ययन करें। तत्पश्चात् केन्द्र में राजनैतिक स्थिरता व वाणिज्य व्यवसाय की स्थिति पर चर्चा करें :-

स्वतंत्रता दिवस कुण्डली 15.8.1947, 00:01 दिल्ली दशा-शनि 18व 0मा 25दि				चैत्र शुक्ल प्रतिपदा कुण्डली 2010 16.3.2010, 2:30 दिल्ली			
ग्रह	राशि	अंश	कला	लग्न/ग्रह	राशि	अंश	कला
लग्न	वृषभ	08	02	लग्न	धनु	17	11
सूर्य	कर्क	27	59	सूर्य	मीन	01	29
चन्द्र	कर्क	03	59	चन्द्र	मीन	01	08
मंगल	मिथुन	07	27	मंगल	कर्क	06	26
बुध	कर्क	13	41	बुध	मीन	02	26
गुरु	तुला	25	52	गुरु	कुंभ	19	26
शुक्र	कर्क	22	34	शुक्र	मीन	16	23
शनि	कर्क	20	28	शनि(व)	कन्या	07	45
राहु	वृषभ	05	04	राहु	धनु	24	47
केतु	वृश्चिक	05	04	केतु	मिथुन	24	47

8. सूर्य, मंगल और शनि को मानसून की देरी व भूकम्प में क्या भूमिका है?
9. वर्ष 2010 के लिए आर्द्र प्रवेश कुण्डली का निर्माण कर देश में वर्षा की स्थिति पर चर्चा करें।
10. क्या मेदनीय ज्योतिष में शनि से बाहरी ग्रहों को भी सम्मिलित करना चाहिए? चर्चा करें।